INTELLIGENTSIA
International Journal of Multidisciplinary Research

Volume (1), Issue (1)
April – June, 2025

Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

कटकमसांडी प्रखण्ड जिला हजारीबाग (झारखण्ड)- एक भौगोलिक अध्ययन

एतवा टुटी
शोधछात्र
भूगोल विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़ (झारखण्ड)

शोध सार :

भूगोल एक बहुविषयक विज्ञान है, जिसका अध्ययन क्षेत्र बेहद विस्तृत है। यह एक ओर पृथ्वी की सतह के भौतिक तथ्यों और घटनाओं के रहस्यों को उजागर करने से जुड़ा है, तो दूसरी ओर मानवीय तथ्यों और गतिविधियों के स्थानिक विश्लेषण को भी अपना लक्ष्य बनाता है। भौगोलिक शोध में अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि के माध्यम से उसकी विशेषताओं का एक समग्र चित्र प्रस्तुत किया जाता है, ताकि शोध से संबंधित उन मुद्दों को गहराई से समझा जा सके जो उस क्षेत्र की भौगोलिक प्रकृति से सीधे या परोक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। कटकमसांडी प्रखण्ड, झारखण्ड के हजारीबाग जिले का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और भौगोलिक क्षेत्र है। यह प्रखण्ड अपने विविध भौगोलिक स्वरूप, प्राकृतिक संसाधनों, और सामाजिक-आर्थिक संरचना के लिए जाना जाता है। यह अध्ययन कटकमसांडी के भौगोलिक विशेषताओं, जैसे भू-आकृति, मिट्टी, जलवायु, वनस्पति, और जनसंख्या वितरण का विश्लेषण करता है, साथ ही इसके आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व को भी रेखांकित करता है। कटकमसांडी का भौगोलिक क्षेत्र मुख्यतः पठारी है, जिसमें मध्यम और निचले पठारों का मिश्रण देखने को मिलता है। इसकी मिट्टी में लेटराइट और रेतीली मिट्टी की प्रधानता है, जो कृषि के लिए मध्यम उपजाऊ है। प्रखण्ड की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है, जिसमें ग्रीष्मकाल गर्म और शुष्क, जबकि मानसून में मध्यम से भारी वर्षा होती है। दामोदर और भराकर जैसी नदियाँ जल संसाधनों का प्रमुख स्रोत हैं, जो सिंचाई और कृषि में सहायक हैं। यहाँ के वन क्षेत्र, जो जिले के लगभग 45% हिस्से को कवर करते हैं, औषधीय पौधों और जैव-विविधता से समृद्ध हैं। जनसंख्या की दृष्टि से, कटकमसांडी में ग्रामीण समुदायों का प्रभुत्व है, जिनमें आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों शामिल हैं। कृषि और वन-आधारित आजीविका यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार है, हालाँकि खनन और छोटे उद्योग भी रोजगार प्रदान करते हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के बावजूद, बुनियादी ढाँचे और कनेक्टिविटी में चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह अध्ययन कटकमसांडी के सतत विकास के लिए नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करता है, जैसे सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, वन संरक्षण, और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना। इस प्रकार, यह अध्ययन कटकमसांडी के भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कुंजी शब्द : कटकमसांडी, हजारीबाग, भौगोलिक अध्ययन

प्रकाशन समयरेखा:
मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 20 अप्रैल, 2025; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 28 अप्रैल, 2025; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 21 मई, 2025; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 15 जून, 2025

अनुशंसित संदर्भ
टूटी, एतवा (2025). कटकमसांडी प्रखण्ड, जिला हजारीबाग (झारखंड) – एक भौगोलिक अध्ययन. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च. 1(1), 93 –107.

o **परिचय :**

भूगोल, अपने प्रारंभिक काल में, पृथ्वी की भौतिक विशेषताओं के व्यवस्थित और क्षेत्रीय अध्ययन तक सीमित था। प्राचीन यूनानी विद्वानों जैसे हेरॉडोटस और एराटोस्थनीज ने पृथ्वी के आकार, जलवायु और भू-आकृतियों का अध्ययन किया, जिसने भूगोल की नींव रखी। मध्यकाल तक, भूगोल मुख्यतः अन्वेषण और मानचित्रण से जुड़ा रहा। परंतु, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में, भूगोलवेत्ताओं के सतत शोध ने इसकी परिधि को विस्तृत किया। भूगोल ने भौतिक विशेषताओं से आगे बढ़कर मानव-केंद्रित आयामों को समाहित किया, जिससे यह एक समग्र विज्ञान के रूप में उभरा। परिणामस्वरूप, भूगोल की दो प्रमुख शाखाएं विकसित हुईं: भौतिक भूगोल और मानव भूगोल। भौतिक भूगोल पृथ्वी की प्राकृतिक विशेषताओं पर केंद्रित है। यह भौगोलिक स्थिति, क्षेत्रीय विस्तार, भू-आकृतिक संरचना, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, और वन्यजीवन का गहन विश्लेषण करता है। उदाहरण के लिए, भौतिक भूगोलवेत्ता पर्वतों की उत्पत्ति, नदियों की जल निकासी प्रणाली, मौसम की गतिशीलता, और जैव-विविधता के वितरण का अध्ययन करते हैं। यह शाखा मानव आवास के लिए प्राकृतिक आधार को समझने में महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर, मानव भूगोल मानव और पर्यावरण के बीच अंतःक्रिया पर ध्यान देता है। यह जनसंख्या, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, शहरीकरण, और सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करता है। आधुनिक भूगोल ने तकनीकी प्रगति, जैसे GIS और रिमोट सेंसिंग, को अपनाकर अपनी प्रासंगिकता बढ़ाई है। ये उपकरण भौतिक और मानव भूगोल के बीच संबंधों को और स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन का अध्ययन दोनों शाखाओं को जोड़ता है, क्योंकि यह प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों दोनों को प्रभावित करता है। इस प्रकार, भूगोल आज एक गतिशील और अंतःविषयी विज्ञान है, जो पृथ्वी और मानव समाज के जटिल संबंधों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

o **अध्ययन का उद्देश्य एवं शोध कार्यप्रणाली**

इस अध्ययन का उद्देश्य कटकमसांडी की भौगोलिक विशेषताओं, जैसे भू-आकृति, मिट्टी, जलवायु, जल निकासी व्यवस्था, और प्राकृतिक वनस्पति का गहन विश्लेषण करना है, ताकि इसके प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरणीय संरचना को समझा जा सके। इस अध्ययन की शोध विधि सर्वेक्षण आधारित और वर्णात्मक है। प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए क्षेत्रीय भ्रमण, मिट्टी और जल स्रोतों का प्रत्यक्ष अवलोकन, तथा स्थानीय निवासियों, विशेषकर आदिवासी समुदायों और किसानों, से साक्षात्कार और प्रश्नावली का उपयोग किया जाएगा। माध्यमिक डेटा जनगणना, जलवायु रिकॉर्ड, और भू-सर्वेक्षण रिपोर्टों से प्राप्त होगा। एकत्रित डेटा का वर्णात्मक विश्लेषण तालिकाओं, ग्राफ, और चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा, ताकि प्रखण्ड की भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक स्थिति का स्पष्ट चित्रण हो और सतत विकास के लिए प्रभावी सुझाव दिए जा सकें।

o **भौगोलिक अवस्थिति एवं विस्तार :**

कटकमसांडी प्रखण्ड , झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिला के अंतर्गत एक सामुदायिक विकास प्रखंड है जो 24°6′27″ उत्तर अक्षांश से 85°12′24″पूर्व देशांतर के मध्य अवस्थित है । इस प्रखंड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 300.52 km^2 है । यह उत्तर में चतरा जिले के इटखोरी और मयूरहंड प्रखंड, पूर्व में पद्मा, इचाक और सदर हज़ारीबाग़ प्रखंड , दक्षिण में कटकमदाग प्रखंड और पश्चिम में चतरा जिले के गिधौर और पत्थलगडा प्रखंड से घिरा हुआ है । इस प्रखंड में कुल अट्ठारह (18) पंचायत एवं बिरासी (82) राजस्व गांव हैं । 2011 की जनगणना के अनुसार कटकमसांडी प्रखंड की कुल जनसंख्या 108,361 है। जिनमें से 55,413 पुरुष हैं जबकि 52,948 महिलाएँ हैं। जबकि कुल साक्षरता दर 67.38% है, जिसमे पुरुष साक्षरता दर 63.79% और महिला साक्षरता दर

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

47.27% है। कटकमसांडी प्रखंड का औसत लिंगानुपात 956 है। यहाँ अनुसूचित जाति (एससी) की आबादी कुल आबादी का 20.9% है जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) कुल आबादी का 6.6% है।

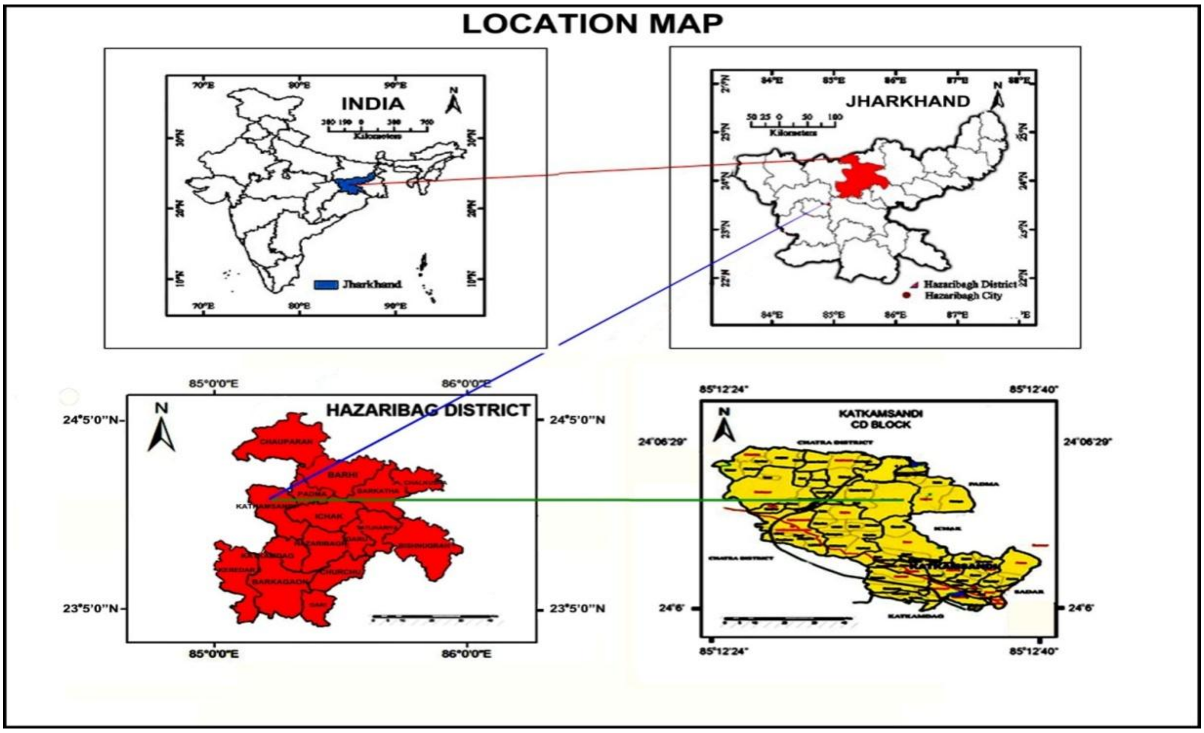

चित्र संख्या -1 : अवस्थिति मानचित्र कटकमसांडी प्रखण्ड,हजारीबाग जिला, झारखण्ड

चित्र संख्या -2 : अवस्थिति मानचित्र कटकमसांडी प्रखण्ड,हजारीबाग जिला, झारखण्ड

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

- **कटकमसांडी प्रखंड का भौतिक स्वरूप और भू-आकृतिक विशेषताएँ**

झारखंड राज्य का कटकमसांडी प्रखंड, जो हजारीबाग जिले के अंतर्गत आता है, भू-आकृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रखंड का भौतिक स्वरूप और भू-आकृतिक विशेषताएँ झारखंड के सामान्य धरातलीय संरचना के अनुरूप हैं, जो विभिन्न पठारी क्षेत्रों, नदी घाटियों और पर्वत श्रेणियों से मिलकर बना है। झारखंड को भू-आकृतिक में निम्न प्रमुख भुवाकृतिक विभागों में विभाजित किया जाता हैं – पाट का पठार, राँची पठार, हजारीबाग पठार और निचली नदी घाटियाँ एवं मैदानी क्षेत्र।

कटकमसांडी प्रखंड हजारीबाग पठार के प्रभाव में है, जो झारखंड के तीसरे प्रमुख पठारी क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। हजारीबाग पठार को ऊपरी हजारीबाग पठार और निचले हजारीबाग पठार (बाह्य पठार) में विभाजित किया गया है। कटकमसांडी के दक्षिण में स्थित ऊपरी हजारीबाग पठार, राँची पठार के समानान्तर है, और इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 600 मीटर है। इसके उत्तर में स्थित निचला हजारीबाग पठार, जिसे बाह्य पठार भी कहा जाता है, झारखंड के निम्नतम पठारी भागों में आता है, और इसकी ऊँचाई 450 मीटर के आस-पास होती है। यह क्षेत्र पारिस्थितिकीय दृष्टि से विविधतापूर्ण है, जिसमें जंगल, नदी घाटियाँ और कृषि योग्य भूमि शामिल है।

कटकमसांडी ब्लॉक झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थित है, जो एक पठारी क्षेत्र है। इस ब्लॉक की भूवैज्ञानिक संरचना मुख्य रूप से आर्कियन ग्रेनाइट और गनीस से बनी है, जिनके साथ ही जिले के दक्षिणी भाग में गोंडवाना सीरीज भी पाई जाती है। आर्कियन युग के ग्रेनाइट और गनीस बहुत पुराने और कठोर चट्टान होते हैं, जो इस क्षेत्र के भूवैज्ञानिक इतिहास को दर्शाते हैं। गोंडवाना सीरीज, जो इस ब्लॉक के दक्षिणी भाग में पाई जाती है, पुरानी और रत्नों से भरपूर मृदा की श्रेणी में आती है, जिसमें कोयला और अन्य खनिजों के deposits होते हैं। हजारीबाग जिले, और विशेष रूप से कटकमसांडी ब्लॉक, की सामान्य ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसका अर्थ यह है कि इस क्षेत्र में जल प्रवाह और नदी प्रणालियाँ दक्षिण-पूर्व दिशा में बहती हैं। इस ढाल के कारण भूजल की दिशा और पानी के भंडारण की विशेषताएँ प्रभावित होती हैं, जो इस क्षेत्र के जल संसाधनों के अध्ययन में महत्वपूर्ण होती हैं। कटकमसांडी ब्लॉक में विभिन्न प्रकार के खनिजों के deposits पाए जाते हैं। इन खनिजों में कोयला, बॉक्साइट, लेटराइट, डोलोमाइट और ग्रेफाइट प्रमुख हैं। इसके अलावा, ग्रेनाइट, क्वार्ट्ज, फायरक्ले, और फेल्सपार जैसे खनिज भी इस क्षेत्र में पाये जाते हैं। ये खनिज इस क्षेत्र के आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनमें से कुछ खनिजों का औद्योगिक उपयोग होता है और अन्य खनिजों के खनन से आर्थिक विकास संभव है।

- **अपवाह तंत्र एवं प्रमुख नदियाँ :**

कटकमसांडी प्रखंड, जो झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थित है, का अपवाह तंत्र दामोदर नदी बेसिन का हिस्सा है और यहाँ की जल निकासी प्रणाली विभिन्न नदियों के जाल से निर्मित है। इस क्षेत्र की मुख्य नदियों में बराकर, कोनार और महनिया (महाने/बलबल) प्रमुख हैं, जबकि अंजन (झोंझी), कटकमसांडी और सवानी नदियाँ इसकी सहायक धाराएँ हैं। ये सभी नदियाँ पठारी क्षेत्रों से उद्गमित होकर स्थानीय भू-आकृति के अनुरूप वृक्षाकार (डेंड्रिटिक) पैटर्न में बहती हैं। मानसून काल में ये नदियाँ पूरी तरह से भर जाती हैं, जबकि ग्रीष्म ऋतु में इनका जल प्रवाह सीमित हो जाता है। इस अपवाह तंत्र की विशेषता यह है कि यह न केवल क्षेत्र की जल आपूर्ति और सिंचाई का प्राथमिक स्रोत है, बल्कि यह भूजल पुनर्भरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ घाटियाँ स्थानीय कृषि के लिए आधार प्रदान करती हैं, जबकि इनके किनारे बसे गाँवों के लिए ये

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

जीवनरेखा का कार्य करती हैं। हालाँकि, खनन गतिविधियों और वनों की कटाई के कारण इस अपवाह तंत्र के प्राकृतिक स्वरूप में परिवर्तन आया है, जिससे जल प्रवाह प्रभावित हुआ है। फिर भी, यह तंत्र कटकमसांडी क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में केन्द्रीय भूमिका निभाता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, यह अपवाह तंत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य से भी इस क्षेत्र की जीवनधारा का प्रतिनिधित्व करता है।

यहां की कुल वार्षिक जल उपलब्धता 3415.72 हेक्टेयर-मीटर है। इस ब्लॉक में मौजूदा जल निकासी के आंकड़े के मुताबिक, सिंचाई के लिए 1094.81 हेक्टेयर-मीटर, और घरेलू एवं औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए 240.98 हेक्टेयर-मीटर जल खपत हो रही है। कुल मिलाकर, सभी उपयोगों के लिए मौजूदा जल खपत 1335.79 हेक्टेयर-मीटर है। घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए अगले 25 वर्षों में 360.95 हेक्टेयर-मीटर जल आवंटित किया गया है। इसके बाद, भविष्य में सिंचाई विकास के लिए 1959.96 हेक्टेयर-मीटर जल उपलब्ध रहेगा। इस ब्लॉक का जल विकास स्तर 39.11% है, जो इसे 'सुरक्षित' श्रेणी में रखता है, यानी जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन नहीं हो रहा है और भविष्य में जल आपूर्ति की स्थिति अच्छी बनी रहेगी। जैसा की तालिका : 01, में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका : 01
कटकमसांडी प्रखण्ड: जल संसाधन उपलब्धता

जल संसाधन का विभिन्न मदों में उपलब्धता	**मात्रा** हेक्टेयर-मीटर में
भविष्य के सिंचाई विकास के लिए उपलब्ध जल	1959.96
अगले 25 वर्षों तक घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए आवंटित जल	360.95
सभी उपयोगों के लिए मौजूदा जल खपत	1335.79
घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए मौजूदा जल खपत	240.98
सिंचाई के लिए मौजूदा जल खपत	1094.81
कुल वार्षिक जल उपलब्धता	3415.72

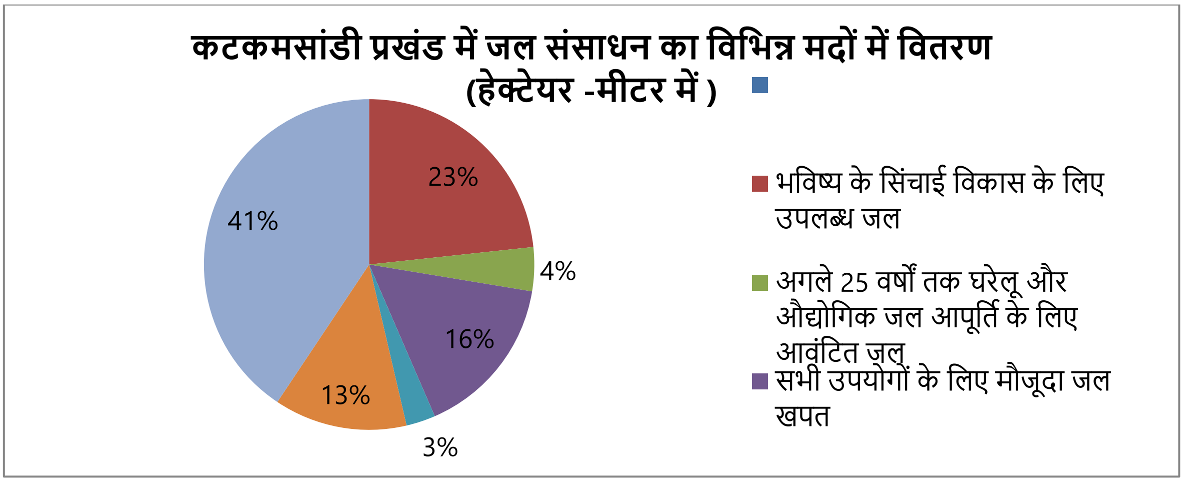

चित्र संख्या : 3

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

- **कटकमसांडी प्रखंड का भौतिक स्वरूप और भू-आकृतिक विशेषताएँ**

झारखंड राज्य का कटकमसांडी प्रखंड, जो हजारीबाग जिले के अंतर्गत आता है, भू-आकृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रखंड का भौतिक स्वरूप और भू-आकृतिक विशेषताएँ झारखंड के सामान्य धरातलीय संरचना के अनुरूप हैं, जो विभिन्न पठारी क्षेत्रों, नदी घाटियों और पर्वत श्रेणियों से मिलकर बना है। झारखंड को भू-आकृतिक में निम्न प्रमुख भुवाकृतिक विभागों में विभाजित किया जाता हैं – पाट का पठार, राँची पठार, हजारीबाग पठार और निचली नदी घाटियाँ एवं मैदानी क्षेत्र।

कटकमसांडी प्रखंड हजारीबाग पठार के प्रभाव में है, जो झारखंड के तीसरे प्रमुख पठारी क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। हजारीबाग पठार को ऊपरी हजारीबाग पठार और निचले हजारीबाग पठार (बाह्य पठार) में विभाजित किया गया है। कटकमसांडी के दक्षिण में स्थित ऊपरी हजारीबाग पठार, राँची पठार के समानान्तर है, और इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 600 मीटर है। इसके उत्तर में स्थित निचला हजारीबाग पठार, जिसे बाह्य पठार भी कहा जाता है, झारखंड के निम्नतम पठारी भागों में आता है, और इसकी ऊँचाई 450 मीटर के आस-पास होती है। यह क्षेत्र पारिस्थितिकीय दृष्टि से विविधतापूर्ण है, जिसमें जंगल, नदी घाटियाँ और कृषि योग्य भूमि शामिल है।

कटकमसांडी ब्लॉक झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थित है, जो एक पठारी क्षेत्र है। इस ब्लॉक की भूवैज्ञानिक संरचना मुख्य रूप से आर्कियन ग्रेनाइट और गनीस से बनी है, जिनके साथ ही जिले के दक्षिणी भाग में गोंडवाना सीरीज भी पाई जाती है। आर्कियन युग के ग्रेनाइट और गनीस बहुत पुराने और कठोर चट्टान होते हैं, जो इस क्षेत्र के भूवैज्ञानिक इतिहास को दर्शाते हैं। गोंडवाना सीरीज, जो इस ब्लॉक के दक्षिणी भाग में पाई जाती है, पुरानी और रत्नों से भरपूर मृदा की श्रेणी में आती है, जिसमें कोयला और अन्य खनिजों के deposits होते हैं। हजारीबाग जिले, और विशेष रूप से कटकमसांडी ब्लॉक, की सामान्य ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसका अर्थ यह है कि इस क्षेत्र में जल प्रवाह और नदी प्रणालियाँ दक्षिण-पूर्व दिशा में बहती हैं। इस ढाल के कारण भूजल की दिशा और पानी के भंडारण की विशेषताएँ प्रभावित होती हैं, जो इस क्षेत्र के जल संसाधनों के अध्ययन में महत्वपूर्ण होती हैं। कटकमसांडी ब्लॉक में विभिन्न प्रकार के खनिजों के deposits पाए जाते हैं। इन खनिजों में कोयला, बॉक्साइट, लेटराइट, डोलोमाइट और ग्रेफाइट प्रमुख हैं। इसके अलावा, ग्रेनाइट, क्वार्ट्ज, फायरक्ले, और फेल्सपार जैसे खनिज भी इस क्षेत्र में पाये जाते हैं। ये खनिज इस क्षेत्र के आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनमें से कुछ खनिजों का औद्योगिक उपयोग होता है और अन्य खनिजों के खनन से आर्थिक विकास संभव है।

- **अपवाह तंत्र एवं प्रमुख नदियाँ :**

कटकमसांडी प्रखंड, जो झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थित है, का अपवाह तंत्र दामोदर नदी बेसिन का हिस्सा है और यहाँ की जल निकासी प्रणाली विभिन्न नदियों के जाल से निर्मित है। इस क्षेत्र की मुख्य नदियों में बराकर, कोनार और महनिया (महाने/बलबल) प्रमुख हैं, जबकि अंजन (झोंझी), कटकमसांडी और सवानी नदियाँ इसकी सहायक धाराएँ हैं। ये सभी नदियाँ पठारी क्षेत्रों से उद्गमित होकर स्थानीय भू-आकृति के अनुरूप वृक्षाकार (डेंड्रिटिक) पैटर्न में बहती हैं। मानसून काल में ये नदियाँ पूरी तरह से भर जाती हैं, जबकि ग्रीष्म ऋतु में इनका जल प्रवाह सीमित हो जाता है। इस अपवाह तंत्र की विशेषता यह है कि यह न केवल क्षेत्र की जल आपूर्ति और सिंचाई का प्राथमिक स्रोत है, बल्कि यह भूजल पुनर्भरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ घाटियाँ स्थानीय कृषि के लिए आधार प्रदान करती हैं, जबकि इनके किनारे बसे गाँवों के लिए ये

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

जीवनरेखा का कार्य करती हैं। हालाँकि, खनन गतिविधियों और वनों की कटाई के कारण इस अपवाह तंत्र के प्राकृतिक स्वरूप में परिवर्तन आया है, जिससे जल प्रवाह प्रभावित हुआ है। फिर भी, यह तंत्र कटकमसांडी क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में केन्द्रीय भूमिका निभाता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, यह अपवाह तंत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य से भी इस क्षेत्र की जीवनधारा का प्रतिनिधित्व करता है।

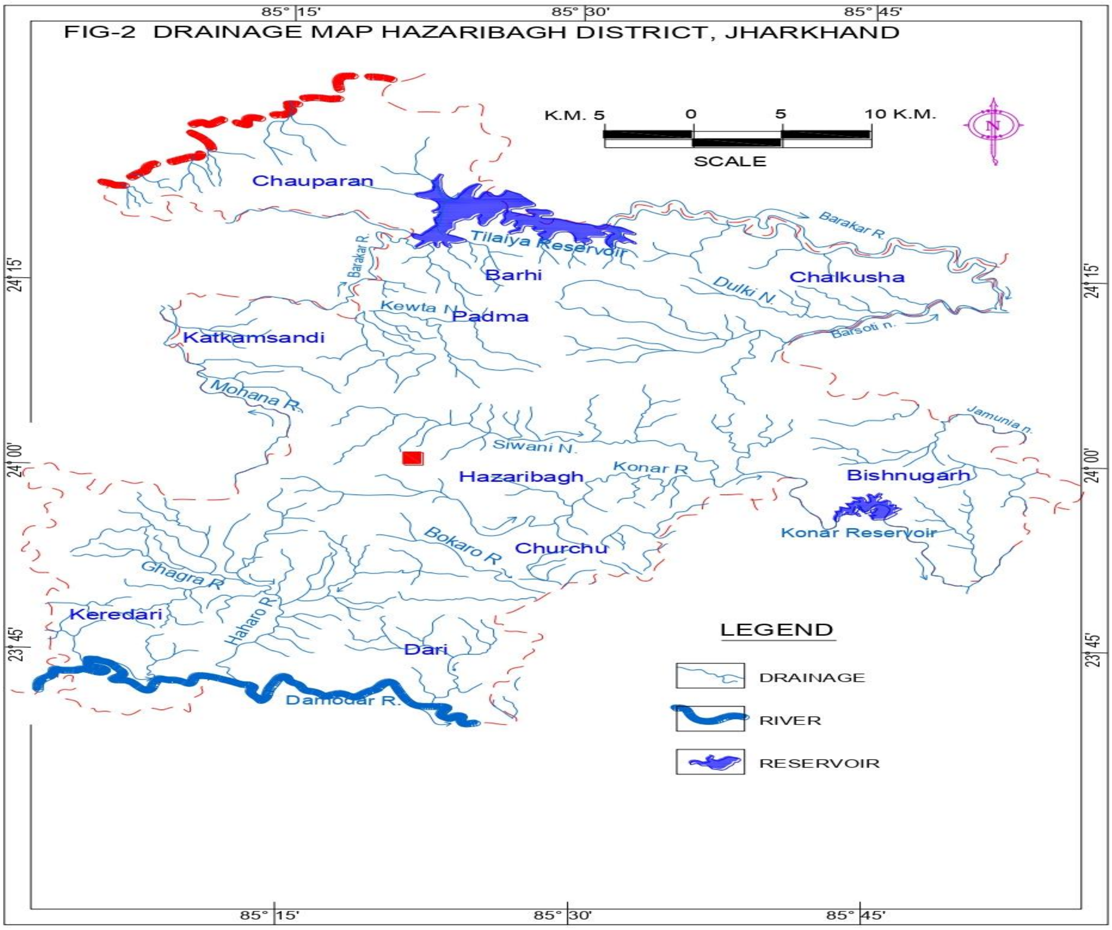

चित्र संख्या -4: कटकमसांडी प्रखंड अपवाह तंत्र एवं प्रमुख नदियाँ

कटकमसांडी ब्लॉक की जल संसाधन स्थिति आंकड़े (2009) के अनुसार , यहां की कुल वार्षिक जल उपलब्धता 3415.72 हेक्टेयर-मीटर है। इस ब्लॉक में मौजूदा जल निकासी के आंकड़े के मुताबिक, सिंचाई के लिए 1094.81 हेक्टेयर-मीटर, और घरेलू एवं औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए 240.98 हेक्टेयर-मीटर जल खपत हो रही है। कुल मिलाकर, सभी उपयोगों के लिए मौजूदा जल खपत 1335.79 हेक्टेयर-मीटर है। घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए अगले 25 वर्षों में 360.95 हेक्टेयर-मीटर जल आवंटित किया गया है। इसके बाद, भविष्य में सिंचाई विकास के लिए 1959.96 हेक्टेयर-मीटर जल उपलब्ध रहेगा। इस ब्लॉक का जल विकास स्तर 39.11% है, जो इसे 'सुरक्षित' श्रेणी में रखता है, यानी जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन नहीं हो रहा है और भविष्य में जल आपूर्ति की स्थिति अच्छी बनी रहेगी।

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

तालिका संख्या: 02
कटकमसांडी प्रखण्ड: जल संसाधन उपलब्धता

जल संसाधन विभिन्न मद	मात्रा हेक्टेयर-मीटर में
भविष्य के सिंचाई विकास के लिए उपलब्ध जल	1959.96
अगले 25 वर्षों तक घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए आवंटित जल	360.95
सभी उपयोगों के लिए मौजूदा जल खपत	1335.79
घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के लिए मौजूदा जल खपत	240.98
सिंचाई के लिए मौजूदा जल खपत	1094.81
कुल वार्षिक जल उपलब्धता	3415.72

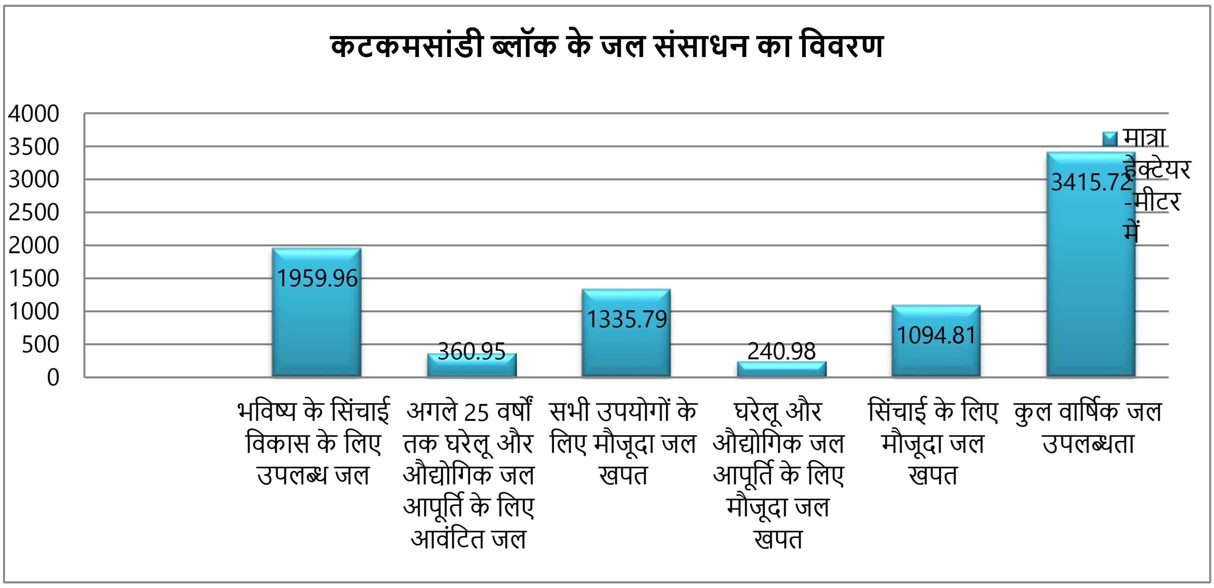

चित्र संख्या : 5

- **मृदा संसाधन**

कटकमसांडी प्रखंड, जो हजारीबाग जिले में स्थित है, में मुख्य रूप से दो प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं: अल्फिसॉल्स (लाल रेतीली मिट्टी) और अल्टिसॉल्स (लाल और पीली मिट्टी)। ये मिट्टियाँ सामान्यतः हल्की संरचना वाली, थोड़ी अम्लीय, और नाइट्रोजन व फॉस्फोरस में कम उपलब्धता वाली होती हैं, लेकिन पोटैशियम में अपेक्षाकृत समृद्ध होती हैं। अल्फिसॉल्स, जो लाल रेतीली मिट्टियाँ हैं, इस क्षेत्र में सामान्य हैं और इनकी उर्वरता मध्यम स्तर की होती है। दूसरी ओर, अल्टिसॉल्स, जो लाल और पीली मिट्टियाँ हैं, अल्फिसॉल्स की तुलना में कम उर्वर होती हैं। कटकमसांडी में भूमि का उपयोग मुख्य रूप से कृषि के लिए किया जाता है, जिसमें धान (चावल) प्रमुख फसल है। इसके अलावा, दालें और तिलहन जैसी फसलें भी उगाई जाती हैं। ये मिट्टियाँ अपनी हल्की संरचना

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

और पोषक तत्वों की विशेषताओं के कारण विभिन्न फसलों के लिए उपयुक्त हैं, हालांकि नाइट्रोजन और फॉस्फोरस की कमी को उर्वरकों के उपयोग से पूरा करना पड़ता है। हजारीबाग जिला, जिसमें कटकमसांडी शामिल है, खनिज संसाधनों के लिए भी जाना जाता है। यहाँ चूना पत्थर, फायर क्ले, चाइना क्ले, क्वार्ट्ज, और कुछ हद तक कोयला जैसे खनिज पाए जाते हैं। ये खनिज संसाधन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। कटकमसांडी की मिट्टियाँ और खनिज संसाधन इस क्षेत्र को कृषि और औद्योगिक गतिविधियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाते हैं, जिससे स्थानीय लोगों की आजीविका को समर्थन मिलता है। मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने और फसल उत्पादन को बेहतर करने के लिए उचित कृषि प्रथाओं और उर्वरकों का उपयोग आवश्यक है।

चित्र संख्या -6

० मौसम एवं जलवायु

कटकमसांडी प्रखंड, हजारीबाग जिले, झारखंड में स्थित है, और इसकी मौसम एवं जलवायु संबंधी विशेषताएँ इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और स्थलाकृति से प्रभावित हैं। कटकमसांडी में उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु पाई जाती है, जो गर्म और आर्द्र ग्रीष्म, ठंडी और शुष्क सर्दी, तथा मानसून के दौरान भारी वर्षा की विशेषता रखती है। ग्रीष्मकाल (मार्च से जून) में तापमान 35-40 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है, और उच्च आर्द्रता के कारण मौसम गर्म और असहज हो जाता है। मानसून (जून से सितंबर) इस क्षेत्र में प्रचुर वर्षा लाता है, जिसमें औसत वार्षिक वर्षा लगभग 1200-1400 मिमी होती है। यह वर्षा कृषि, विशेषकर धान की खेती के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि कटकमसांडी में अधिकांश खेती वर्षा आधारित है। सर्दियों (नवंबर से फरवरी) में तापमान 10-25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है, और मौसम सुखद व शुष्क होता है। इस मौसम में रबी फसलों की खेती की जाती है। कटकमसांडी की जलवायु और मिट्टी (अल्फिसॉल्स और अल्टिसॉल्स) की प्रकृति इसे धान, दालें और तिलहन जैसी फसलों के लिए उपयुक्त बनाती है। हालांकि, अनियमित मानसून या सूखे की स्थिति कभी-कभी कृषि को प्रभावित करती है। क्षेत्र में वनों और पहाड़ी इलाकों की उपस्थिति जलवायु को स्थानीय स्तर पर प्रभावित करती है, जिससे कुछ क्षेत्रों में ठंडी हवाएँ और कोहरा आम है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जैसे अनियमित वर्षा और तापमान में

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

वृद्धि, कटकमसांडी में कृषि और जल संसाधनों पर दबाव डाल रहे हैं। इसके लिए टिकाऊ कृषि प्रथाओं और जल प्रबंधन की आवश्यकता है ताकि क्षेत्र की जलवायु और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना किया जा सके।

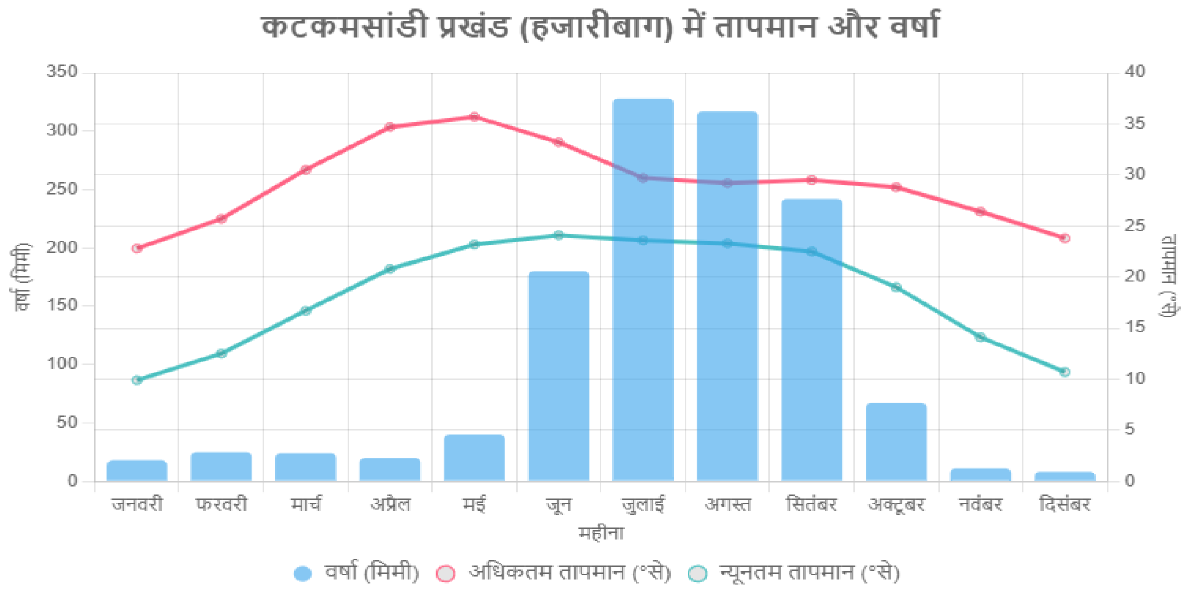

चित्र संख्या : 7

○ वन एवं वन्यजीव प्राणी

कटकमसांडी प्रखंड, हजारीबाग जिले, झारखंड में स्थित है और यह अपनी प्राकृतिक समृद्धि, विशेष रूप से वनों और वन्यजीवों के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में वन मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय पर्णपाती प्रकार के हैं, जिनमें साल, सागौन, महुआ, और बाँस जैसे वृक्ष प्रमुख हैं। ये वन क्षेत्र की जैव-विविधता को समृद्ध करते हैं और स्थानीय जलवायु को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कटकमसांडी के वन क्षेत्र, जो हजारीबाग के वन्यजीव अभयारण्य के निकट हैं, विभिन्न वन्यजीव प्रजातियों के लिए आवास प्रदान करते हैं। वन्यजीवों में, कटकमसांडी और आसपास के क्षेत्रों में तेंदुआ, भालू, जंगली सुअर, चीतल, सांभर, और बरकिंग डीयर (काकड़) जैसे स्तनधारी पाए जाते हैं। तेंदुए इस क्षेत्र में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि हजारीबाग जिला समय-समय पर तेंदुओं की उपस्थिति के लिए जाना जाता है। इसके अलावा, लंगूर, बंदर, और गीदड़ जैसे छोटे स्तनधारी भी सामान्य हैं। पक्षियों की विविधता भी उल्लेखनीय है, जिसमें मोर, जंगली मुर्गी, तोता, नीलकंठ, और विभिन्न प्रवासी पक्षी शामिल हैं। सरीसृपों में सांप (जैसे कोबरा और क्रेट), छिपकली, और कछुए भी पाए जाते हैं। गंगा नदी की सहायक नदियों और स्थानीय जलाशयों में मछलियाँ और छोटे जलचर प्राणी भी देखे जा सकते हैं। कटकमसांडी के वन कृषि और स्थानीय समुदायों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये वन लकड़ी, ईंधन, और गैर-लकड़ी वन उत्पाद (जैसे महुआ, तेंदू पत्ते) प्रदान करते हैं। हालांकि, अवैध कटाई, खनन गतिविधियाँ (हजारीबाग में चूना पत्थर और कोयला खनन), और मानव-वन्यजीव संघर्ष इस क्षेत्र की जैव-विविधता के लिए चुनौतियाँ हैं। वन्यजीव संरक्षण के लिए, हजारीबाग वन्यजीव अभयारण्य और आसपास के संरक्षित क्षेत्रों में संरक्षण प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन कटकमसांडी में स्थानीय स्तर पर जागरूकता और टिकाऊ प्रथाओं की आवश्यकता है। वन और वन्यजीवों के

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

संरक्षण के लिए सामुदायिक वानिकी और पर्यावरणीय शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि इस क्षेत्र की प्राकृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सके।

o अध्ययन क्षेत्र की मानवीय विशेषताएं

भौगोलिक शोध में "अध्ययन क्षेत्र की मानवीय विशेषताएं" का अर्थ उस क्षेत्र की उन विशेषताओं से है जो मानव गतिविधियों, संस्कृति, और सामाजिक-आर्थिक कारकों से संबंधित हैं। ये विशेषताएं किसी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को मानव जीवन के संदर्भ में समझने में मदद करती हैं। इसमें जनसंख्या वितरण, घनत्व, साक्षरता दर, व्यवसाय, धर्म, भाषा, संस्कृति, परंपराएं, बस्तियों का प्रकार (ग्रामीण/शहरी), और आर्थिक गतिविधियां जैसे कृषि, उद्योग, व्यापार आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, मानव द्वारा निर्मित संरचनाएं जैसे सड़कें, भवन, और बुनियादी ढांचा भी मानवीय विशेषताओं का हिस्सा हैं। भौगोलिक शोध में इन विशेषताओं का अध्ययन यह समझने के लिए किया जाता है कि मानव और पर्यावरण के बीच अंतर्संबंध कैसे कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी क्षेत्र की जलवायु या भौगोलिक स्थिति वहां की बस्तियों, कृषि पद्धतियों, या आर्थिक गतिविधियों को कैसे प्रभावित करती है। यह शोध नीति निर्माण, शहरी नियोजन, और संसाधन प्रबंधन में सहायक होता है। मानवीय विशेषताओं का विश्लेषण क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक प्रगति, पर्यावरणीय प्रभाव, और सतत विकास की संभावनाओं को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

o जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताएं

2011 की जनगणना के अनुसार, कटकमसांडी प्रखंड की कुल जनसंख्या 108,361 थी, जिसमें 93,513 ग्रामीण और 14,848 शहरी क्षेत्रों में निवास करते थे, जो क्षेत्र में ग्रामीण-प्रधान जनसंख्या वितरण को दर्शाता है। पुरुष जनसंख्या 55,413 (51%) और महिला जनसंख्या 52,948 (49%) थी, जिससे लिंगानुपात 955 महिलाएं प्रति 1,000 पुरुष रहा, जो झारखंड के औसत (948) से बेहतर है। जनसंख्या घनत्व मध्यम स्तर का है, जो प्रखंड के भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर हजारीबाग जिले के अन्य प्रखंडों से तुलनीय है। साक्षरता दर 67.88% थी, जिसमें पुरुष साक्षरता 77.07% और महिला साक्षरता 57.21% थी, जो 19.86% के लैंगिक अंतर को दर्शाता है। यह अंतर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा तक सीमित पहुंच को उजागर करता है, हालांकि कुल साक्षरता झारखंड के औसत (67.63%) के करीब है। अनुसूचित जाति (SC) की जनसंख्या 22,699 (20.95%) और अनुसूचित जनजाति (ST) की जनसंख्या 7,141 (6.59%) थी, जो सामाजिक विविधता और समावेशी विकास की आवश्यकता को दर्शाता है। धार्मिक संरचना में हिंदू 67.46%, मुस्लिम 28.48%, ईसाई 1.59%, और अन्य धर्म (मुख्य रूप से सरना) 2.47% थे, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करता है। कार्यशील जनसंख्या 38,098 (35.16%) थी, जिसमें खेतीहर मजदूर 28.33%, कृषक 27.78%, गृह उद्योग में 2.21%, और अन्य कार्यों में 41.68% लोग शामिल थे। गैर-कार्यशील जनसंख्या 70,263 (68.84%) थी, जो आर्थिक निर्भरता के उच्च स्तर को दर्शाती है। यह जनसांख्यिकीय संरचना कटकमसांडी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने में महत्वपूर्ण है, जहां साक्षरता और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और जनजाति समुदायों के लिए, विकास योजनाओं की आवश्यकता है। धार्मिक और भाषाई विविधता (खोरठा 49.2%, हिंदी 27.3%, उर्दू 18.39%) क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है, जो सामाजिक एकता और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

तालिका संख्या :02

जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताएं -कटकमसांडी ब्लॉक जनगणना, 2011

क्रम संख्या	विवरण	आंकड़े
1.	कुल जनसंख्या	83,525
2.	ग्राम पंचायतों की संख्या	18
3.	राजस्व गांवों की संख्या	82
4.	कुल साक्षरता दर (%)	44
5.	पुरुष साक्षरता दर (%)	63.9
6.	महिला साक्षरता दर (%)	36.2
7.	अनुसूचित जाति जनसंख्या (%)	21.6
8.	अनुसूचित जनजाति जनसंख्या (%)	4.9

स्रोत : जनगणना,2011

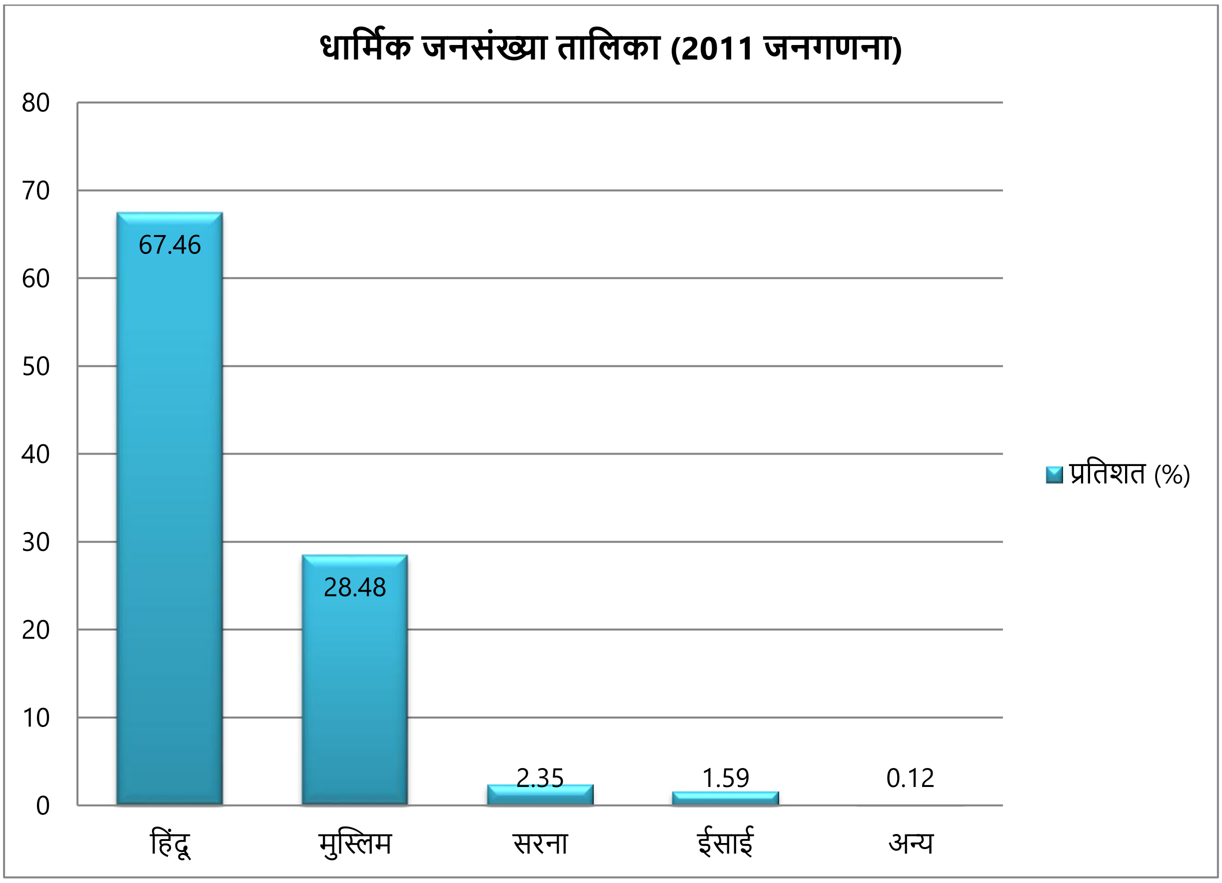

चित्र संख्या : 8

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

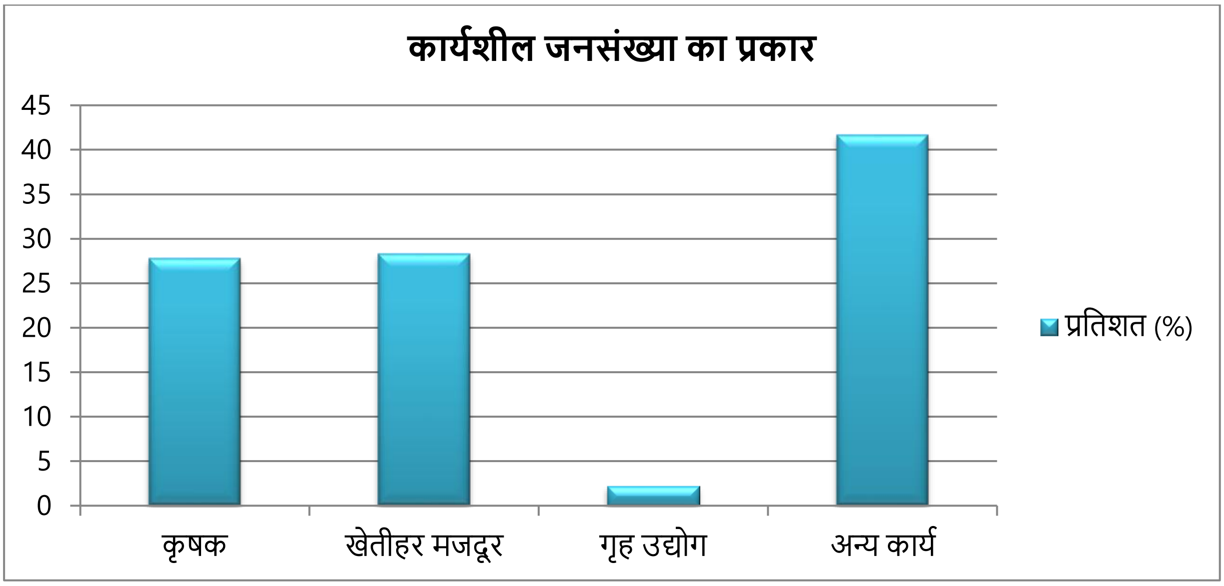

चित्र संख्या : 9

o कटकमसांडी प्रखंड की मुख्य आर्थिक क्रियाएं

2011 की जनगणना के आधार पर मुख्य रूप से कृषि, खेतीहर मजदूरी, गृह उद्योग और अन्य कार्यों पर केंद्रित हैं। प्रखंड की कार्यशील जनसंख्या 38,098 (35.16%) है, जिसमें से 27.78% (10,582 लोग) कृषक हैं, जो स्वयं की भूमि पर खेती करते हैं। यह क्षेत्र की कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। खेतीहर मजदूर, जो दूसरों की भूमि पर मजदूरी करते हैं, 28.33% (10,794 लोग) हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की निर्भरता को दर्शाता है। प्रमुख फसलें चावल, मक्का, दालें (अरहर और चना), और तिलहन हैं, जो खरीफ (मई-अक्टूबर) और रबी मौसम में उगाई जाती हैं। नकदी फसलों जैसे गन्ने की खेती सीमित है। सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण अधिकांश खेती वर्षा पर निर्भर है, विशेष रूप से नदी किनारों की उपजाऊ भूमि पर। गृह उद्योग, जिसमें 2.21% (842 लोग) कार्यरत हैं, छोटे पैमाने के हस्तशिल्प और घरेलू उत्पादन को शामिल करता है। अन्य कार्य, जो 41.68% (15,880 लोग) हैं, सबसे बड़ा हिस्सा है और इसमें व्यापार, परिवहन, शिक्षण, और छोटे उद्यम शामिल हैं। यह विविधता शहरी क्षेत्र (पेलावल जनगणना शहर) और कोडरमा-हजारीबाग-बरकाकाना-रांची रेलवे लाइन जैसे बुनियादी ढांचे के विकास से प्रेरित है। हालांकि, 68.84% गैर-कार्यशील जनसंख्या आर्थिक निर्भरता को दर्शाती है। वन क्षेत्र (जिले का 45%) और हजारीबाग वन्यजीव अभयारण्य पर्यटन और वन-आधारित गतिविधियों की संभावनाएं प्रदान करते हैं। कटकमसांडी की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए बेहतर सिंचाई, गृह उद्योगों का विकास, और कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

o कटकमसांडी प्रखंड की सांस्कृतिक विशेषताएं

कटकमसांडी प्रखंड, झारखंड के हजारीबाग जिले का एक सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण क्षेत्र है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, यहाँ की आबादी में प्रमुख धर्मों में हिंदू (67.46%) और मुस्लिम (28.48%) समुदाय हैं। इनके अलावा सरना धर्म (2.35%) और ईसाई धर्म (1.59%) के अनुयायी भी यहाँ

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

निवास करते हैं। यह धार्मिक विविधता कटकमसांडी की संस्कृति को बहुरंगी और समन्वयात्मक बनाती है। यहाँ की सांस्कृतिक पहचान मुख्यतः भोक्ता (गंझू), उरांव, मुंडा, तथा अन्य अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों की परंपराओं पर आधारित है। अनुसूचित जातियों की जनसंख्या लगभग 20.95% और अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या लगभग 6.59% है। जनजातीय संस्कृति यहाँ की सांस्कृतिक विरासत में गहराई से रची-बसी है।

यह क्षेत्र विविध भाषाई पृष्ठभूमि से भी समृद्ध है। खोरठा (49.2%) यहाँ की प्रमुख बोली है, जो स्थानीय जनजीवन और लोक साहित्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। हिंदी (27.3%) प्रशासनिक और शैक्षणिक भाषा है, जबकि उर्दू (18.39%) विशेषतः मुस्लिम समुदाय में प्रचलित है। साथ ही, मुंडारी और सादरी जैसी जनजातीय भाषाएँ भी यहाँ बोली जाती हैं, जो सांस्कृतिक विविधता को और गहराई प्रदान करती हैं। त्योहार और परंपराएँ इस क्षेत्र की संस्कृति का मूल आधार हैं। हिन्दू समुदाय दीपावली, होली, दुर्गा पूजा जैसे पर्वों को उत्साह से मनाता है, वहीं मुस्लिम समुदाय रमज़ान, ईद और बकरीद मनाता है। जनजातीय समुदायों में सरहुल, करम, सोहराय और माघ पर्व विशेष महत्व रखते हैं, जो प्रकृति पूजा और सामुदायिक एकता पर आधारित हैं। करम पूजा में करम वृक्ष की पूजा कर लोग अपने भाई-बहनों की लंबी उम्र और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। लोकनृत्य और संगीत जैसे *डोमकच, जाट-जटिन, झूमर* और पारंपरिक वाद्ययंत्र जैसे *मांदर, नगाड़ा,* और *बांसुरी* इन सांस्कृतिक आयोजनों का प्रमुख हिस्सा होते हैं। पारंपरिक पोशाकों में पुरुष आमतौर पर धोती-कुर्ता पहनते हैं, जबकि महिलाएं साड़ी और पारंपरिक गहनों से सजी रहती हैं।

- **कटकमसांडी प्रखंड में अवसंरचना (शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संचार)**

कटकमसांडी प्रखंड, हजारीबाग जिले का एक महत्वपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र है, जहाँ अवसंरचना के विभिन्न क्षेत्रों में लगातार विकास हो रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार कटकमसांडी सीडी ब्लॉक के 77 बसे हुए गाँवों में से 65 गाँवों में बिजली, 4 गाँवों में नल जल (साफ/असाफ), सभी 77 गाँवों में कुएँ और हैंडपंप की सुविधा थी, जिससे सभी गाँवों में पीने के पानी की उपलब्धता थी। 9 गाँवों में पोस्ट ऑफिस, 4 में उप डाकघर, 8 में लैंडलाइन और 31 गाँवों में मोबाइल नेटवर्क की सुविधा थी। सभी गाँवों में पक्की सड़कों की सुविधा थी, जबकि 8 गाँवों में बस सेवा, 5 में ऑटो/मॉडिफाइड ऑटो और 30 गाँवों में ट्रैक्टर उपलब्ध थे। 3 गाँवों में बैंक शाखाएँ और 7 में कृषि ऋण समितियाँ थीं। मनोरंजन और ज्ञान संसाधनों की दृष्टि से किसी भी गाँव में सिनेमा हॉल या सार्वजनिक पुस्तकालय नहीं था। 32 गाँवों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली, 14 गाँवों में साप्ताहिक हाट और 38 गाँवों में विधानसभा मतदान केंद्र।

2011 की जनगणना के अनुसार, कटकमसांडी सीडी ब्लॉक के 77 बसे हुए गाँवों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति इस प्रकार थी: 8 गाँवों में प्राथमिक विद्यालय की कमी थी, 56 गाँवों में एक और 13 गाँवों में दो या अधिक प्राथमिक विद्यालय थे; 38 गाँवों में कम से कम एक प्राथमिक एवं एक माध्यमिक, और 7 गाँवों में माध्यमिक एवं एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मौजूद थे। हालांकि उच्च शिक्षा (कॉलेज) की सुविधा सीमित है, परंतु छात्र आस-पास के शहरों जैसे हजारीबाग जाकर आगे की पढ़ाई करते हैं। शिक्षा का स्तर सुधार की दिशा में है, परन्तु अब भी बेहतर शिक्षण संसाधनों और शिक्षकों की आवश्यकता महसूस की जाती है। स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित थीं—1 गाँव में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 8 में प्राथमिक स्वास्थ्य उप-केंद्र, 2 में मातृत्व एवं बाल कल्याण केन्द्र, 1 में एलोपैथिक अस्पताल, 1 में वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र, 1 में डिस्पेंसरी और 3 में चिकित्सा दुकानें थीं, जबकि 62 गाँवों में कोई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं थी ।

- **मानव –वातावरण सम्बन्ध**

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

कटकमसांडी प्रखंड में मानव और पर्यावरण के बीच संबंधों में तेजी से असंतुलन देखने को मिल रहा है। शहरीकरण की अनियंत्रित प्रक्रिया और खनन केंद्रों के विस्तार ने यहाँ की पारिस्थितिकी व्यवस्था को गहरा आघात पहुँचाया है। यह क्षेत्र खनिज संपदा के लिए जाना जाता है, जिससे यहाँ खनन गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं। इन गतिविधियों ने खेती योग्य भूमि को सिकोड़ दिया है और लोगों की आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। पहले जहाँ हरियाली और खेतों की भरमार थी, अब वहाँ खदानें और कंक्रीट के ढांचे दिखाई देते हैं। वनों की अंधाधुंध कटाई से न केवल पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हुआ है, बल्कि जैव विविधता भी बुरी तरह प्रभावित हुई है। पहले जहाँ अनेक प्रकार के वन्यजीव और पक्षी दिखाई देते थे, आज केवल कुछ ही जीव-जंतु जंगलों में बचे हैं। अधिकतर जैव विविधता या तो विलुप्त हो चुकी है या संकट में है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता को गहरा नुकसान पहुँचा है।

इस बदलते पर्यावरण का स्थानीय निवासियों पर भी नकारात्मक असर पड़ा है। रोजगार के पारंपरिक साधनों जैसे कृषि और वनों पर आधारित आजीविका की उपलब्धता में भारी कमी आई है। परिणामस्वरूप यहाँ पलायन की दर में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से युवा वर्ग रोजगार की तलाश में अन्य शहरों की ओर जा रहा है। वहीं जो लोग यहीं रह गए हैं, वे गरीबी और बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं। शहरीकरण भी असंतुलित रूप में हुआ है, जिससे मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी बनी हुई है। जल, स्वच्छता, सड़क और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार पर्याप्त रूप से नहीं हुआ है। खनन के कारण प्रदूषण का स्तर बढ़ा है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। इस संपूर्ण परिदृश्य में यह स्पष्ट है कि कटकमसांडी प्रखंड मानव-पर्यावरण संबंधों के बिगड़ते संतुलन का उदाहरण बन चुका है। यदि समय रहते पर्यावरण संरक्षण, नियोजित विकास और स्थायी रोजगार के साधनों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो स्थिति और भी गंभीर हो सकती है। आवश्यकता है कि पर्यावरणीय दृष्टिकोण से संतुलित विकास की योजना बनाई जाए, जिससे स्थानीय लोगों के जीवनस्तर में सुधार हो और पारिस्थितिकी तंत्र भी सुरक्षित रह सके।

संदर्भ सूची

1. एक्का, ए. (2010). ट्राइबल डेवलपमेंट पॉलिसीज एंड प्रैक्टिस इन झारखंड. रांची: ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पृ. 42.
2. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय. (2011). जनगणना हैंडबुक: हजारीबाग जिला (सीरीज-21, झारखंड, भाग XII-B). नई दिल्ली: जनगणना विभाग.
3. पांजा, ए. के., और सिंह, पी. के. (2023). सोशियो-इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ वर्किंग पॉपुलेशन इन हजारीबाग सीडी ब्लॉक: ए ज्योग्राफिकल स्टडी. *शोध समागम, 5*(3), 963–970.
4. महतो, एल. एल., कुमार, एम., कुमार, जे., नाथ, एस., और लाल, डी. (2021). फॉरेस्ट चेंजेज एंड फ्रैगमेंटेशन एनालिसिस ऑफ हजारीबाग डिस्ट्रिक्ट ऑफ झारखंड, इंडिया यूजिंग जियोस्पेशियल टेक्नोलॉजी. *फार्मा इनोव जर्नल एसपी-10*(1), 222-227.
5. भौमिक, ए., और बसाक, ए. (2022, जुलाई). डेमोग्राफिक, एजुकेशनल एंड सोशियो-इकोनॉमिक कंडीशन ऑफ अर्बन पुअर: ए केस स्टडी ऑफ हजारीबाग नगर निगम, झारखंड. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस स्टडीज (आईजेएचएसएसएस), 8*(4), 68–82.
6. हालदर, एस., और मुखोपाध्याय, एस. (2017). नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट एंड रूरल लाइवलीहुड डेवलपमेंट इन चर्चू ब्लॉक ऑफ हजारीबाग डिस्ट्रिक्ट, झारखंड. *सेमिनार पब्लिकेशन एट इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन नेचुरल रिसोर्सेज मैनेजमेंट फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड रूरल लाइवलीहुड्स* (वॉल्यूम 1, पीपी. 169-181).

******

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved